में परिणत हो गया, क्योंकि यह निश्चित है कि श्रीकृष्ण से प्रबोध प्राप्त कर अर्जुन अन्त तक युद्ध करेगा।

28.1

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः।।१०।।

तम्=उसे; **उवाच**=कहा; **हृषीकेशः**=इन्द्रियों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण ने; **प्रहसन् इव**=हँसते हुए से; **भारत**=हे भरतवंशी धृतराष्ट्र; **सेनयोः**=सेनाओं के, **उभयोः**=दोनों दलों की; **मध्ये**=मध्य में; **विषीदन्तम्**=शोकमग्न; **इदम्**=यह; **वचः**=वचन।

अनुवाद

हे भरतवंशी धृतराष्ट्र! उस समय भगवान् श्रीकृष्ण ने दोनों सेनाओं के मध्य में उस शोकमग्न अर्जुन को हँसते हुए से यह वचन कहा।।१०।।

तात्पर्य

दोनों अन्तरंग सखाओं—हृषीकेश तथा अर्जुन में परस्पर वार्तालाप हो रहा है। सखा-रूप में बराबर होने पर भी उनमें से एक ने स्वेच्छा से दूसरे का शिष्यत्व ग्रहण किया है। श्रीकृष्ण मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं क्योंकि एक सखा स्वेच्छापूर्वक दूसरें सखा का शिष्य बन गया। परमेश्वर श्रीकृष्ण नित्य सब के स्वामी हैं, फिर भी भक्त के भावानुसार उसे अपना सखा, पुत्र, प्रेमी अथवा भक्त अंगीकार कर लेते हैं और यथासमय स्वयं भी ये रूप ग्रहण करने में संकोच नहीं करते। इसी प्रकार जब उन्हें गुरु अंगीकार किया गया तो उन्होंने तत्काल वह पद ग्रहण कर लिया और उपयुक्त गाम्भीर्य के साथ स्वामी की भाँति शिष्य का अनुशासन करने लगे। प्रतीत होता है कि गुरु-शिष्य का यह सम्भाषण दोनों सेनाओं की उपस्थिति में खुले रूप से सम्पन्न हुआ, जिससे सभी लाभान्वित हुए। अस्तु, भगवद्गीता की सार्वभौम मंगलमयी वाणी किसी विशेष व्यक्ति, समाज अथवा जाति के लिए नहीं है। उसका श्रवण करने में शत्रु-मित्र आदि सभी का समान अधिकार है।

29.1

श्रीभगवानुवाच।
अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।११।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **अशोच्यान्**=जो शोक करने के योग्य नहीं है; **अन्वशोचः**=(उनके लिए) शोक करता है; **त्वम्**=तू; **प्रज्ञावादान्**=पण्डितों के समान; **च भाषसे**=बोलता हुआ भी; **गतासून्**=जिनके प्राण चले गये हैं; **अगतासून् च**=और जिनके प्राण नहीं गये हैं, उनके लिए भी; **न अनुशोचन्ति**=शोक नहीं करते; **पण्डिताः**=पण्डितजन।